

• गीत •

शील मणी प्रेम धणी, साई प्यारा ।

पल पल आशीश दियाइ, जीअ जियारा ॥

गुलड़नि जी सेज ठाहे, तोखे विहारियां ;

प्रेम-भिनी माधुरी तुंहिजी, नाथ निहारियां ।

प्रीति-पुष्प चयनु करे, तोखे सींगारियां ;

दरस तां दिलिदार जे, ट्रेई लोकिड़ा वारियां ।

गोद भली लालु लली, जगत उजियारा ॥

दिलि में दिलिबर जो लाडु, नेणनि नीहु आ ;

रोम-रोम तुहिजे वसे मधुर मीहु आ ।

रसना में रामु नामु, राति दीहें आ ;

प्राणनि में प्राणनाथ, प्रेम-पीह आ ।

तवहां जे कथा कुंज वसनि, दशरथ दुलारा ॥

विरह जी वणिकार, मिलण मौज भरी तो;

कोकिल जी कूक हियें, हूक हरी तो ।

जुगल चरण धोता लाए, नैन झड़ी तो;

कीरति प्यारे कंत जी आ, जीअ जड़ी तो ।

माखीअ मिठी सिकिड़ी सुठी, अमल उदारा ॥

अमरनि खां ऊंचो तुहिजो, भागु आ जानी;

ट्रिन्ही लाकनि कीन दिसां, साहिब जो शानी ।

राग़ तुहिंजे रीधो रहे दशरथ दानी;
 गोलनि जे गलिड़े में विधइ, गुणनि जी ग़ानी ।
 चपिड़ा लालु कनि निहालु, वचन जी धारा ॥

भगति जो भण्डारु खोले, लाल लुटाई;
 दीन दुखी जीवनि, सची विन्दुर वसाई ।
 अनुभवी आकाश जा नितु, बोल बुधाई;
 ललित लीला लाल जी थो, अंधनि लखाई ।
 मैगसिचन्द्र आनन्द कन्द, सत्संग सहारा ॥